|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1. Februar 2025 | | |
| **7. Sonntag im Jahreskreis C** | | |
| Erste Lesung: 1 Sam 26,2.7-9.12-13.22-23; Zweite Lesung: 1 Kor 15,45-49; Evangelium: Lk 6,27-38 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 409, 1-4 | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  | GL 272, 1+2 | Zeige uns, Herr, deine Allmacht |
|  | GL 427, 1+2 | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
| Kyrie: | GL 437, 1+2+4 | Meine engen Grenzen |
| Gloria: | GL 173, 1+2 | Gloria. Ehre sei Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 103, 1-4. 8 u. 10.12-13 |  |
|  | Kehrvers: GL 657, 3 | Dein Erbarmen, o Herr |
|  | GL 385, 1 | Nun saget Dank |
|  |  |  |
| Halleluja: | Ruf: GL 174, 6 |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Ein neues Gebot gebe ich euch:* | |
|  | *Wie ich euch geliebt habe, so sollt auch ihr einander lieben.* | |
|  | Oder |  |
|  | *Dies ist mein Gebot:* |  |
|  | *Liebet einander, wie ich euch geliebt habe.* | |
|  | Oder |  |
|  | GL 483, 4 | Liebet einander |
|  |  |  |
| Credo: | GL 792, 1-3! | Ich glaube, Herr |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 146, 1-3 | Du rufst uns, Herr |
|  | GL 440, 1-5 | Hilf, Herr, meines Lebens |
|  | GL 445 | Ubi caritas + |
|  |  | Priestergebete „Gepriesen bist du …“ |
|  | GL 446, 1-4 | Lass uns in deinem Namen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 194 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 206 | O Lamm Gottes |
|  | GL 798, 1-3 | Wo Menschen sich vergessen |
| Danksagung: | GL 543, 2+3 | Von Herzensgrund ich spreche |
|  | GL 382, 1+2 | Ein Danklied sei dem Herrn |
|  | GL 384, 1+2 | Hoch sei gepriesen |
|  | GL 452, 1+4+6+7 | Der Herr wird dich mit seiner Güte |
|  | GL 456, 4 | Vater unsres Lebens |
| Schlusslied: | GL 464 | Gott liebt diese Welt |